इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी

डॉ. कान्ति कुमार

Scanned with OKEN Scanner

ISBN-81-86295-35-6

प्रकाशक : साहित्यवाणी
28, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद 211 006

कॉपीराइट © : डॉ० कान्तिकुमार

संस्करण : प्रथम, 2001 ,

मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये मात्र

आवरण : चन्द्रदीप, इलाहाबाद

लेज़र कंपोजिंग : प्रयागराज कम्प्यूटर्स
13, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद 211 002

मुद्रक : केशव ऑफसेट इलाहाबाद द्वारा मुद्रित,
फोन : 607321

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

सिंहासन खाली करो कि 'हिंग्लिश' आती है	11
हिन्दी की प्रकृति और शब्दों का संक्षिप्तीकरण	16
आखिर ये एम० एस० गुप्ता कौन हैं?	20
इतनी कितनी हिन्दियाँ	23
अपसंस्कृति और दूरदर्शन की हिन्दी	33
इक्कीसवीं शताब्दी के नाम	35
जी, आपका शुभ नाम	39
क्रान्तिकुमार कहे जाने पर	42
मुकेश होने का अर्थ	46
सर्वश्री होने की शरम	49
'जी हाँ' कहेंगे हम तो	52
साहिल से किनारा टकराये	55
इक्कीसवीं शताब्दी के प्रतिनिधि शब्द—लोग और लुगाई, जन और जनी	58
'दिनकर' की काव्य-भाषा प्रयोगों पर कुछ एतराज	60
जमनावाली कविता कैसे जमी	62
हिन्दी का भोपाली ठाठ	65
खड़ी बोली का ग्वालियरी रूप	69
मंदसौर की हिन्दी	74
जातीय स्मृति और बुन्देली के कतिपय लोक प्रचलित शब्द	77
हुड्डु, विंसेंट स्मिथ और हम	81
हिन्दी और सरदार खुशवन्त सिंह	84
अबे, सुन बे गुलाब	86
लोक भाषाओं को बचाना क्यों जरूरी है?	90
हिन्दी की समृद्धि के लिए हमें बोलियों के भदभदा द्वार खोल देने चाहिए	93

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी के दर्पण में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का स्वरूप 97
भारतीय नारी और भाषा की कसौटी 101
क्रोशिया बुनते हुए थानेदार साहब 104
पं० जवाहर लाल नेहरू हिन्दी भाषा के बारे में क्या सोचते थे? 107
बंजारे ये शब्द 111
श्री, श्रीमती, कुमारी 115
बोदा आदमी बोदा क्यों होता है? 119
अंग्रेजी का भूगोल और हिंग्रेजी 126

□□

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner